

काया की ममता को टारी, करते सहन परीषह भारी ।
पंच महाव्रत के हो धारी, तीन रतन के हो भंडारी ॥
आत्म स्वरूप में झुलते करते, निज आत्म-उद्धार,
कि तुमने छोड़ा सब घर बार ॥१॥

राग-द्वेष सब तुमने त्यागे, वैर-विरोध हृदय से भागे ।
परमात्म के हो अनुरागे, वैरी कर्म पलायन भागे ॥
सत् सन्देश सुना भविजन को, करते बेड़ा पार,
कि तुमने छोड़ा सब घर बार ॥२॥

होय दिगम्बर वन में विचरते, निश्चल होय ध्यान जब करते ।
निजपद के आनंद में झुलते, उपशम रस की धार बरसते ॥
मुद्रा सौम्य निरख कर, मस्तक नमता बारम्बार,
कि तुमने छोड़ा सब घर बार ॥३॥

(९)

म्हारा परम दिगम्बर मुनिवर आया, सब मिल दर्शन कर लो,
हाँ, सब मिल दर्शन कर लो ।
बार-बार आना मुश्किल है, भाव भक्ति उर भर लो,
हाँ, भाव भक्ति उर भर लो ॥टेक॥

हाथ कमंडलु काठ को, पीछी पंख मयूर ।
विषय-वास आरम्भ सब, परिग्रह से हैं दूर ॥
श्री वीतराग-विज्ञानी का कोई, ज्ञान हिया विच धर लो, हाँ ॥१॥
एक बार कर पात्र में, अन्तराय अघ टाल ।
अल्प-अशन लें हो खड़े, नीरस-सरस सम्हाल ॥
ऐसे मुनि महाव्रत धारी, तिनके चरण पकड़ लो, हाँ ॥२॥
चार गति दुःख से टरी, आत्मस्वरूप को ध्याय ।
पुण्य-पाप से दूर हो, ज्ञान गुफा में आय ॥
'सौभाग्य' तरण-तारण मुनिवर के, तारण चरण पकड़ लो, हाँ ॥३॥